साजा है सजन राम, राम है कुल जहान।

श्री साजन जी के पत्र

सभाओं के नाम

भूमिका

जैसा कि सजनों को विदित है कि सतवस्तु के कुदरती शास्त्र की रचना कलयुग में हुई जिसमें लिखित सत्य मार्ग को दर्शाते हुए युक्तियों का वर्णन है। जिनको अपनाने से हर सजन मनमत से निकल गुरमत (जो कुदरत की वाणी है) का संग कर अपनी ज्ञान इन्द्रियों द्वारा समझ कर, अपना कर ज्ञान इन्द्रियों और कर्म इन्द्रियों द्वारा प्रयोग में लाता हुआ मनुष्य जीवन का लक्ष्य और उसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नों के बारे में समझ सकता है, क्योंकि ये ग्रन्थ कुदरत की वाणी है और कलयुगी वातावरण में सतयुगी वातावरण के प्रवेश को दर्शाने वाली है। इसे समझना, अपनाना हर सजन के लिए कठिन जानते हुए, कुदरत के वाली श्री साजन जी ने पत्रों द्वारा सत्संगी सजनों को उनके परिवार और कुल संसार को इस वाणी को कार्य–वन्त करने के लिए समय–समय पर समझाना चाहा ताकि हर सजन इसे अपनी मेहनत द्वारा सक्षम बन सके जिसे वह परिवार व संसार में विचरता हुआ मन–मस्तिष्क को हर परिस्थिति में शान्त रख सकें और अपने प्रति, परिवारिक व दूसरे सजनों के प्रति अपने फ़र्ज अदा को सुचारू रूप से और प्रसन्न चित से करने के योग्य बनें ताकि उन सजनों के ख्याल से, स्वभावों से कलयुग की कालिमा समाप्त हो और सत्य जो अपना आप प्रकाश है सजनों के ख्याल और स्वभावों में बस जाये।

इन पत्रों द्वारा हर सत्संगी व सत्संग चलाने वाले को सतवस्तु के शास्त्र के पाठ रखने के बारे में, गायन व कीर्त्तन के बारे में और तीनों यज्ञों के बारे में भी समझौता है।

क्योंकि इन पत्रों मे लिखित बातों की जानकारी हर सजन के पास नहीं थी, इसलिए यत्न कर अनेकों पत्रों में से जितने भी मिल पाये हैं आप सजनों के सामने प्रस्तुत करना उचित समझा गया ताकि आप सजन स्वार्थ व प्रमार्थ दोनों में समान्यता उन्नति कर, जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति कर सकें। आशा है कि हर सजन अपने ही परिश्रम से अपने लिए सुख और शान्ति खरीद करेगा ताकि यह जीवन आनंदमय बन जाये।

Request for this book

Email
info@satyugdarshantrust.org